fcykb ekSlh

(बालकथा संग्रह)

डा० नीता झा

प्रोफेसर, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

प्रभात प्रकाशन
खाजासराय, लहेरियासराय
दरभंगा– 846001

BILAI MAUSI
A Collection of Short Stories for Children
By **NEETA JHA**

प्रकाशक : **श्री अमरेन्द्र झा**
प्रभात प्रकाशन
खाजासराय, लहेरियासराय
दरभंगा– 846001
दूरभाष : 06272–241190
मोबाइल : 9431219590

पुस्तक प्राप्ति स्थान : ι **श्री अमरेन्द्र झा**
खाजासराय, लहेरियासराय
दरभंगा– 846001
दूरभाष : 06272–241190
ι **लेखक**

ISBN - 978-81-922838-5-2

प्रथम संस्करण : 2011 ई. (300 प्रति)

आवरण एवं चित्रांकन : पृथा सिंह

मूल्य : **100.00**

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर चौक, दरभंगा

पुस्तकक नाम	ISBN
1. फड़िच्छ	978–81–922838–0–7
2. कथा नवनीत	978–81–922838–1–4
3. सामाजिक असंतोष ओ मैथिली साहित्य	978–81–922838–2–1
4. पृथा	978–81–922838–3–8
5. देशकाल	978–81–922838–4–5
6. बिलाइ मौसी	978–81–922838–5–2

—बसुली माने...

—बाँसुरी... । चारि-पाँच गोटे एक दोसरक हाथ पकड़िक' 'घोघोरानी' बला खेल जेकाँ घेरा बनाक' नाचैत रहै... कइयेक गोटे 'रेलगाड़ी' बनिक छुक...छुक... करैत मूड़ी डोलबैत नाचैत रहै... । सभक अपन-अपन मन आ मूड रहै... । सभ मगन रहै... । कैसेट खतम भ' गेलैक त' सभहक पयर-हाथ-देह स्थिर भ' गेलैक... प्लेयर दिस देखैत माङ कयलकै— गानाऽऽ गानाऽऽऽ । फेर मास्टरे साहेब सभकेँ बुझाबैत शान्त कयलथिन जे सुख-सुखराती, दीयाबाती भ' गेलैक... आब छठम दिन छठि पाबनि होयतैक... ।

—अहाँ की कयलियै नानीमाँ... ?

—हम सभकेँ 'फ्रूटी' देलियै... । आबैत काल ओ सभ सीटी बजाक' हमरा सभकेँ विदा कयलक... । तोँ आइ की सुनयबेँ...?

हम की सुनाउ... ? उँऽ उँऽऽ उँऽऽऽ, हँ—

शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसम्पदौ ।
दुष्टबु[illegible]विनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ।

l

नानीक

बौआ-सुग्गा-सोना-तोता-मैना

पृथाक लेल

अशेष सिनेह आ दुलारक संग—

—**नन्नी**

—नानीमाँ ओकर आइडिया त' ब्रिलिएन्ट रहैक... लाजवाब... एहन आइडिया त' हमरो नइ आयल कहिओ... ओह हम बड़ 'मिस' कयलौं नानी माँ ।

—तेँ ओ सब 'खासमखास' छै... हमरो अफसोच होइयै आब, तोरा नइ ल' गेलिऔ से... । असलमे हमरासभकेँ कहल गेल रहय जे सनकल-बताहक आश्रम छैक, तेँ नइ ल' गेलिऔ । मुदा ओ सभ सनकल-बताह नइ छै... । देहसँ चेतन भ' गेल छैक आ दिमाग ओ बु[illegible] नेना बला छैक तेँ नेनमति स्वभाव छैक— अबूझ । कहनिहारे बेबूझ रहय... । दीयाबाती भ' गेलैक त' सुधा नानीजी सभकेँ नास्ताक पैकेट देलथिन । सभ बेंचपर बैसल रहैक । एतबा ज्ञान रहै जे सभक हाथमे पैकेट पड़ि गेलै तखन खायब शुरू कयलक... । मास्टर साहेब सिखौने होयथिन— संग रहब-संगमे काज करब । असली बात आब सून...।

शीला नानीजी कैसेट प्लेयर ल' गेल रहथिन । एत्तीकालसँ सभ रोशनी आ फटक्कामे मगन रहय... नस्तो क' लेलक, तखन ओकर सभक नजरि कैसेट प्लेयर पर पड़लै... सभ निहारै ओकरा... केओ-केओ छूबिओक' देखै आ गानाऽऽ गानाऽऽ करै... । चालू क' देल गेलै त' फेर सभटा दूनू हाथ उठाक' थपड़ी पारय लागल रहै... फेर पुछलथिन— नाच...आ की बस ओ सभ गोल-गोल घूम' लगलै— झूम' लगलै... । स्नेह नानीजी आ बलजीत नानीजी 'भंगड़ा' क'क' देखा देलथिन त' ओहो सभ नकल उतारैत— बल्लेऽऽ-बल्लेऽऽ कयलकै... । एक गोटे एक हाथ डांड़पर आ दोसर माथ पर राखिक' नाचय लगलै... एकटा गोल-गोल घुमैत रहलै...

—ओकरा घुरमी नइ लागलै...?

—एकटा चुक्कूमाली भेल बैसले-बैसले आगाँ-पाछाँ डोलैत रहैक । एकटा कागज गोलिआक' मोड़ि नेने रहै आ बसुली बजबै...

—छिनलकै कियैक... ?

—ओ अनारदाना सभ जमा क'क' एकटा घेरा बनाक' कने-कने दूर पर राखिक' एक संग जराब' चाहैत रहै— तेँ छीनैत रहै... । एत्ते ओकरा नइ बूझ' अयलै जे सभकेँ बुझाक' माङि लितै... । ओ उत्साहमे रहै आ अबूझ त'छैहे ओ सभ... । मास्टर साहेब बात बुझलथिन । ओ सभहक स्वभाव-व्यवहार चीन्हैत रहथिन ने, से ओ बूझि गेलथिन जे ओ की कर' चाहै छै... कियेक सभक अनारदाना छीनै छै... । फेर सभटा बचलाहा अनारदानाकेँ एकटा पैघ गोल घेरामे राखल गेलै... दूर-दूर पर आ जराओल गेलै... । एक संग गोल घेरामे ओते अनारदानाक रोसनी बड़ नीक लागैत रहैक । ओहो सभ बड़ खुश रहैक-खूब उछलै-कूदै आ थपड़ी पाड़ै जाइ... ।



हम, अहाँ आ ई बाल कथा संग्रह...

हम अपन बाल्यावस्थासँ किशोरावस्थाक कालखण्डमे ई बूझि गेल रही जे हमर पिता, जे कॉलैज औफ कॉमर्स, पटनाक गणित विभागक, अवकाश प्राप्त विभागाध्यक्ष छथि, किताब लिखैत छथि, त' हमर बाल मनमे— हमहूँ लीखब— लौल भ' गेल छल । से लौल पूर करय लागलहुँ कथाक नाम पर कागतक किछु पन्ना रंगिक' । ओ लौल संतुष्ट भेल जखन हमर परिचिति एकटा कथाकारक रूपमे स्वत: बनय लागल... आ बनि गेल...। पढ़ैत-लिखैत प्रौढ़ावस्थामे पहुँचि गेल छी । धीयापुताक धीयापुताकेँ खिस्सा-पिहानीक रूपमे अपन समाजक परिचिति आ संस्कार देबाक काखण्डमे पहुँचि गेल छी...। दौहित्री पृथाकेँ फुसिआ पनिआक' खोआबैत काल आ रातिमे सुतबाक बेरमे पयर जाँतैत काल खिस्सा-पिहानी करय लागलहुँ...। अपन पितामहीक मुँहसँ सुनल खिस्साकेँ स्मरण करबाक प्रयास विफल रहल । टुकड़ी-टुकड़ीमे किछु-किछु मन पड़ल... ओहिसँ खिस्सा नहि पूरापूरी बना सकलहुँ... । मनकेँ अतीतमे और बौआय देलियैक त' ओतय भेटल आङनमे टाल लागल मकइक बाइल... संध्याकाल तकरा लाठी ल' क' डेङाबैत जन-बनिहार... नेरहा आ दाना अलग कयल जा रहल छैक... कइयेक गोटे बाइलमे सूआसँ धारी लगा लगाक' फेकने जा रहल छैक, घरक स्त्री, धीयापुता आ जन-बनिहारक स्त्री मकइ छोड़ा रहल

छैक आ खिस्सा चालू छैक... लययुक्त स्वरमे... सभ राति ओयह खिस्सा सभ घुमा फिराक' । खिस्सा पूर होयबासँ पहने ओंघरा जाइ...। बहुत मन पाड़ल त' राजा... तीन टा रानी, दू टा बाँझ, एकटाकेँ नेना, जंगलमे नौड़िन फेक अयलै, रोड़ा-पाथर, रानीकेँ वनबास, फूलक गाछ, नेना फूलक गाछ, फूल नेना, रानीकेँ महलबास, एतबे मन पड़ल । पूरा खिस्सा नहि बनल । एकटा दोसर खिस्साक एकेटा पाँती मन पड़ल— चल मेरे तुम्मा टुम्मक टूं.. ई पितामहीक मुँहसँ सुनने रही— एहिमे एकटा बुढ़िया रहै आ एकटा नेना, एहिसँ आगाँ दिमाग संग नहि देलक । इयह हाल और खिस्सा सभक भेल ।

त' की हम नातिनकेँ खिस्सा नहि सुना सकब ? आ, अपन मनकेँ हम ललकारलहुँ...। हमर पितामही हमरा सुनबैत रहय आ हम अपन बच्चाकेँ नहि सुना सकैत छी...? आ बना सोनाक' सुनाबय लागलहुँ । बच्चाकेँ नीक लगलैक...से, एना बुझलहुँ जे ओ खिस्सामे डूबि जाय... पात्रक संग तादात्म्य बना लेअय आ ओकरा दिससँ सवाल जवाब करय... । नव-नव खिस्साक माङ करय लागलि... । नमहर भेल गेल आ हम चम्पक, नंदन, बालहंस आ एकबारमे छपलाहा, छोट-छोट कथाक सहारा लेअय लगलहुँ । आब हमर नातिनकेँ ई बोध भ' गेलैक जे ओकर नानी लिखैत छथिन... ।

-नन्नी, तुम कहानी लिखती हो, मेरे लिये भी लिखो... ।

-हम मैथिलीमे लिखै छी, तों त' बजितो ने छैं, त' पढ़बैं कोना ?

-हम समझते हैं... पढ़ भी लेंगे...। आ, हम ओकरा दू चारि पाँती लीखक' देलियैक ओ पढ़लक । हम तत्क्षण नेयारि लेलहुँ जे पृथा लेल हम बालकथा

जेकाँ आ केओ डेरायल सन ठाढ़ । एकटाकेँ पकड़िक' रखने रहैक स्टाफ, ओ रहि-रहिक' पड़ाइ... । प्रीति नानीजी पुछलथिन— हम सभ अहाँ संग दीयाबाती मनाउ ? सुनिते ओ सभ थपड़ी पाड़िक' उछलय-कूदय लागलै । आशा नानीजी ओकरा सभकेँ टोपी पहिरा देलथिन... गीता नानीजी सभक हाथमे सीटी देलथिन— एक संग सभ बजब' लगलैक । हँस्सी-ठहक्काक बीच हमर सभक कान फाटय लागल । ओ सभ खुशीसँ मगन रहय... एक दोसरक कानमे सीटी बजबै... । नुजहत नानीजी फुक्का बला पन्नी फाड़लथि आ सभकेँ देलथिन... । सीटी छोड़िक' सभ फुक्का फुलबयमे लागि गेल । हमर नमहर त' हम्मरक कम्पीटीसनमे फुक्का सभ फट्।क-फट्।क फूटय लगलै... । ताहू पर ठहक्का... जकर फुक्का फूटि जाइ, से कननमुँह भ' जाय । तखन सीमा नानीजी मोमबत्तीक पैकेट निकालि पतिआनीमे राखि दू-चारि टा बारि देलथिन । फेर त' ओ सभ अपना-अपनीक' बारय लगलै । बारल भ' गेलैक त' कखनो दूर जाक' फेर ल'ग आबिक' देखय आ कूदि-कूदिक' थपड़ी पाड़य... । ओकर सभक खुसी देखिक' हमरा सभकेँ बड़ नीक लागल । द्रौपदी नानीजी पुछलथिन— चकरी चलेबैँ... ? आ, सभकेँ एक-एकटा देलथिन— ओत्ते चकरी ल' गेल रहियै नानीमाँ... ?

—हँ गय, गनिक' कीनल गेल रहैक सब चीज- पच्चीस-पच्चीस टा... ।

एक गोटे अनारदाना हाथमे ल'क' उनटा-पुनटाक' देखैत रहैक त' श्यामा नानीजी पुछलथिन— जरायब... ओ मूड़ी डोला क' 'हँ' कहलकै— जरा देलथिन । तकर बाद त' सभटा अपन-अपन हिस्सा ल'क' एकक बाद दोसर-तेसर जराबय लगलै... । एकटाकेँ की ने की फुरलै आ, की ओ सभक हाथसँ अनार छीनय लगलै— हथरस भ' गेलै कने-मने । आश्रमक मास्टर साहेब सभकेँ शान्त करओलथिन ।

बाँटि-कूटि खाइ राजा घर जाइ

एसकर खाइ डोम घर जाइ ।

—ओकर सभक केओ नहि छै, ओ सभ अनाथ छै... हेरायल-भुतिआयल, बौआइत-टौआइत नेना आ चेतनकेँ, जकर केओ नइ छै, तकर देखभाल एकटा आश्रम करै छै । ओही एकटा आश्रममे हम सभ जयबै, ई सभ ल'क' ।

—हम सभ... माने हमहूँ ।

—नईं तोँ नईं, हमर सखी-बहिनपा सभ जनिका सभकेँ तोँ 'नानीजी' कहै छहुन । आइ साँझमे हमसभ जेबै, ओकरे सभक संग दियाबाती करबै... ।

—हमरो ल' चलूऽऽऽ ने... ।

—आइ हम देख अबै छी, त' दोसर दिन तोरा ल' जयबौ... हम्मर सोना बेटीऽऽ ! नानी पृथाकेँ पोल्हबैत कहलथिन ।

रातिमे सुतैत काल पृथाक पयर जाँतैत नानी सँझुका खिस्सा सुनबय लगलथिन... 26 जनवरी, फगुआ, बैसाखी, 15 अगस्त, 14 नवम्बर, दीयाबाती, क्रिसमस, ईद आदि पाबनि-तिहारमे कोनो-ने-कोनो संस्थाक, जे अनाथक पालन-पोषण करैत छैक, संग मनबैत छी । दस-पन्द्रह गोटे हम सभ मिलक' टका जमा करै छी आ अवसरक अनुरूप सामान आ खयबा-पिउबाक वस्तु ल' क' कोनो एक संस्थाक नेना सभकेँ उल्लास-खुशी, अपनापन आ 'खासमखास' अछि ओ सभ, तकर बोध किछुये क्षण-पलक लेल सही करबैत छियै । से एहि बेर हम सभ मानसिक विकारसँ ग्रस्त नेना सभक संग दीयाबाती मनयबाक विचार कयने रही । पहुँचलहुँ ओतय त' बच्चा सभ, बच्चा कहाँ, सभ चेतन रहै, पतिआनीमे ठाढ़ । सभक हाथ 'नमस्कार'क मुद्रामे । ककरो ठोर पर मुस्की, केओ हँसैत, ककरो ठोर दुनू सीअल

लीखब आ, जन्मदिनक अवसर पर उपहार स्वरूप प्रकाशित करयबाक दायित्व नानाक रहतनि ।

बना-सोनाक' खिस्सा सुनादेब आसान लागल रहय, तकरा कलमब□ करब आ, से नेना-भुटकाक लेल, बहुत कठिन लागल । सोझ सरल शब्दक प्रयोगे टा करबाक आवश्यकता मात्र नहि बुझायल, मनलग्गू बनायब ओहूसँ अधिक जरूरी लागल । अस्तु... ।

करार भ' गेल रहय नातिन-नानीमे जे, जे खिस्सा सभ सुनओने छियैक, सैह सभ पोथीमे रहतैक... छाँटबाक आवश्यकता सेहो भ' गेल...। एहिना होइत-होइत 2009 आ 2010 इस्वीक पृथाक जन्मदिन बीत गेलैक । नातिन अग्निश्च वायुश्च भेलि— मत लिखो कभी मत लिखना मेरे लिये । से, डेडलाइन भेल **2011 इस्वीक 15 सितम्बर** !

हम सभ अपन जमानामे खिस्सा सुनैत काल एतेक सवाल-जवाब नहि करियैक जतेक आइ काल्हुक धीयापुता करैत छैक । प्रत्यक्ष अनुभवक आधार पर पृथाकेँ बालवर्गक-समस्त बालवर्गक प्रतिनिधि मानैत छी हम । आजुक नेना बड़ जिज्ञासु आ तर्कशील होइत छैक । जे-जेना कहबकै से नहि मानत । ओकर बु□ हमरा अहाँसँ अधिक तीक्ष्ण आ दृष्टि अधिक सोझ-सोझरायल छैक । कोनो बात, स्थिति, घटनाकेँ संगति-सम्मति पर पूर्णत: बैसाइयेक दम लैत छैक । हमरा सभ द्वारा कयल गेल कोनो प्रश्नक जवाबमे इयह होइछ, एहिना होइ छै..., सूनिक' चुप नहि रहि जायत। हम सभ शांत-संतुष्ट भ' जाइत रही, प्रश्नक अगिला कड़ीक अभावमे, दूर दृष्टि नहि रहय एतेक । आइ काल्हुक धीयापुताक समाजक दिमागी सोच आ कल्पनाक उड़ानकेँ सीमामे नहि बान्हल जा सकैछ । प्रत्येक कथामे पृथा द्वारा उठाओल गेल सवाल पृथे द्वारा कयल गेल छैक । ओ कथाकार द्वारा ठाढ़ कयल

गेल प्रश्न नहि छैक । एहि दृष्टिकोणसँ ओ प्रश्न सभ पृथाक रूपमे समस्त बालवर्गक मनक जिज्ञासा थिक । ओकर अपन सोच, दृष्टि, तर्क सहमति आ असहमति छैक । तेँ कहल पृथा बालवर्गक प्रतिनिधि थीक ।

एहि कठिन काजकेँ सरल बनयबामे श्री सुरेन्द्र भारद्वाज, कनीय शोध गवेषक, यू.जी.सी.क बड़ पैघ हाथ छनि । छिड़िआयल कागतक पन्ना पुस्तकक आकार ग्रहण कयलक अछि हुनके सहयोगसँ । सुरेन्द्रजीकेँ शतश: स्नेहाशीष ।

एहि घड़ीमे हर्षक संग मन पड़ि रहल छथि डा० नरेन्द्र नाथ झा । व्याख्याताक रूपमे हुनक नियुक्ति बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुज□फरपुरक **पण्डित यमुना कार्यी जयन्ती महाविद्यालय** बगाही, खरौना, ढ़ोलीमे भेलनि अछि ।

एकटा महत्वपूर्ण बात ई जे ISBN एजेंसी लंदन द्वारा हमर सभ पुस्तक, फड़िच्छ सँ देशकाल धरि सूचीब□ भ' गेल अछि जे एक पृष्ठमे अलगसँ संलग्न अछि । श्री संजूजी आ हुनक टीमकेँ अनेकश: धन्यवाद !

एहि बाल कथा संग्रहक सभटा स्केच-चित्रांकन हमर दौहित्री पृथा सिंहक छैक । ओ कल्पनाशील, संवेदनशील आ सृजनात्मक क्षमतासँ भरल अछि, हमरा लगैत अछि जे ओ परनाना आ नानीक लीख पकड़ि सकैत अछि । अंग्रेजी हिन्दीमे बाल मनक कथा-कविता लिखैत अछि...। पृथाकेँ जे खिस्सा सभ सुनबैत रहियैक, ताहिमेसँ छाँटिक ई सातो कथाक संग्रह ल' क' आइ हम अहाँ सभक समक्ष उपस्थित भेल छी...।

15.9.2011

दियाबाती

—नानीमाँ ई सभ ककरा लेल अनलियै अछि ? हमरा लेल ? बहुत्ते-बहुत्ते छै— मोमबत्ती, फुलझड़ी, चकरी, अनारदाना... अरे बेलूनोक पैकेट अइ... सीटी... टौफी... अरे वाह ! नानीमाँ हमर जन्म दिन आइ नहि अछि, तखन एत्ते रास बेलून आ टौफी.. अरे मारते रास टोपिओ अइ । झोरासँ सभ वस्तु निकालिक' उनटा-पुनटाक' देखैत पृथा बाजलि । नास्ताक पैकेट सेहो छै आ एक पूरा कार्टुन फ्रूटी... नानीमाँ कहू ने, ई सभ की हेतै, ककरा देबै... हमरो देब ने... !

—तों सामान सभकेँ गजपट नइ कर, जे जेना छै, तहिना रह' दहीं । नइ त' हमरा फेरसँ सैंत' पड़त ।

—ककरा देबै से कहू ने... ।

—दोसर बच्चा सभ लेल छै... ।

—ओकरा सभकेँ ओकर माय-बाप नइ देतै... ? एकटा फटक्का हम ल' लीअ...?

— नईं ! एकदम्म नईं । तों त' बुझनुक छैं... शेयरिंग-केयरिंग छैं... मिल-जुलिक' रही, बाँटि-कूटिक' खाइ... ।

—नानीमाँ...

फूरल होयतैक ओकरा आ, ओ भायकेँ कोरामे उठाक' पड़ायलि होयत... नरभसा गेल होयतैक बेचारी बुच्ची । धड़फड़ाक' उतरैमे कोरासँ ओकर भाइ खसि पड़ल होयतैक... । हँऽ हँऽऽऽ इयह भेल होयतैक, एहिना भेल होयतैक... । आ एकबारमे लीखल छैक जे चटगुनी पर सूतल नेनाकेँ पहिने बानर सभ घिसिऔलकै आ तकर बाद उठाक' पटकि देलकै...।

जे अपन नेनाकेँ पेटमे साटिक' राखैत छैक, ओ दोसरक नेना संग एना करतैक...? ओहऽऽऽ ! तेँ बानर सभ ओतेक दुःखी रहैक । ओ ककरा कहितैक अपन मनक बात... । एतय अशोक वाटिका नहि छैक, हँ एकटा अशोकक गाछ छैक । भरिसक तेँ ओही गाछक त'रमे बैसल आ अपन मनकथा सीता माताकेँ कहने होयतनि जे... हम त' मनुक्खक दोस छी, मनुक्खक पूर्वज थिकहुँ... तखन हमरा माथपर एहन कलंक कियेक... ? आइ भरिसक ओही काजे आयल छल, आ काज क'क' चल गेल... । छट्टू झा तय कयलक जे आइ रातिमे नानीकेँ ओयह खिस्सा सुनओतैक । बानरक खिस्सा... बानरक मनक बात... । खिस्साक बाद नानीकेँ किछु सुनाबय पड़तैक, से सोचिक' ओ गायत्री मंत्र याद करय लागलि—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ...

l

अनुक्रमणिका

~~सादा~~

अक्षरमे छपल रहैक । पूरा समाचार पढ़िक' ओकरा भरोस नहि भेलैक जे बानर ओना कयने होयतैक, जेना समाचार छपल रहैक । सुआइत बेचारा बानर सभ ओतेक दुःखी रहैक... गलती मनुक्खक आ दोषी बेचारा जानवर– निमूह बानर... । ओकरा दिससँ के बाजतैक ? ओकर पक्ष के लेतैक... ? बानरक दल काल्हि ओहि महल्लामे गेल होयतैक, जतुक्का समाचार छपल छैक । ओतुक्के पार होयतैक काल्हुक ।



छत पर रौदमे जनमौटी नेनाकेँ माय सुता देने रहैक । लगमे, सिआन नहि, एकटा ननकिरबी ओकरा ल'ग रहैक, ओकर बहीन-तीन-चारि बरखक... । ई त' साफ मनुक्खक... नेनाक मायक गलती भेलैक ने... । बानरक कोन दोष ? हुहुआइत अबैत बानर दलकेँ देखि ओ ननकिरबी ठीके ने घबरा गेल होयतैक... हरल ने

आ ऊपरे-ऊपर फानैत देखैत बड़ नीक लागैक । ओकर मन होइक जे दल सभ दिन आबितय । मुदा दल भरिसक इलाका बाँटिक' पार बन्हने रहय... आजुक पार रहैक... । रवि...' छुट्टीक दिन से ओकरा इसकुल जयबाक हड़बड़ी नहि रहैक । आबि गेलैक दल... लेकिन ई की... ? धीरे-सुस्ते मरल चालिये, जेना कोनो चिन्ता-फिकिरमे डूबल होअय । छहरदेबाल फानिक' भीतर ढुकलैक मुदा, कूद-फान नहि कयलकैक आन दिन जेकाँ । छातीमे बच्चाकेँ साटने छड़पैत कूदैत रहैक, बच्चा ओहिना सट्टल रहैक । कहिओ ने खसलै । बड़ अचरजक बात... ।

मन्हुआयल बानरक दल अशोक गाछ तर गोलिआक' बैसि रहलैक । मूड़ी घुमाक' चारू दिस ताकलकै, उपर गाछो दिस देखलकै । फेर मुँह लटकौने बैसले रहि गेलैक जुअनका-जुअनकी आ बुढ़बा-बुढ़िआ सभ । छोटका बच्चा सभकेँ बेसी काल संयत भ'क' बैसल पार नहि लगलैक त' ओ सभ कूद-फान करय लगलैक । एमहर-ओमहर दौड़य लागल । सीढ़ी पर राखल चीज-वस्त पर नजरि पड़लैक त' दू-चारिये छड़पानमे पहुँचि गेलैक उपर आ, सभटा बटोरने नेने चल गेल । गाछपर बैसि क' खाय लागल रहैक । बनरबा सभ बड़ीकाले ओहिना बैसले रहलैक । पता नहि कोन बातक दु:ख मनमे पैस गेल रहैक । फेर सभटा ओहिना धीरे-धीरे- मरले चालिये विदा भेल आ छहरदेबाल फानिक' बाहर दिस कूदि गेलैक । छट्टू झाक मनमे ई बात पैस गेलैक जे आखिर बनरबा सभकेँ भेलैक की ? कोनो बात छैक त' जरूर । रातिमे सुतैत काल नानीमाँकेँ पुछतैक, से सोचैत ओ अशोक गाछ त'र गेल, जतय बानर सभ बैसल रहैक । ओहो चारू कात ताकलकै, उपर गाछो दिस देखलकै, कतहु किछु तेहन बात नहि बुझयलैक । ओ घूरि आयलि । आ एकबार उनटाबय लागलि । एकठाम ओकर नजरि अटकि गेलैक—

बन्दरों ने एक नवजात की जान ले ली— खूब बोल्ड

fcykb ekSlh

~~सादा~~

बानरक मनकथा

छत पर जायबला सीढ़ी पर बासि रोटी, सुखल पावरोटी, उतरल पाकल केरा, तरकारीक काटन-खोटन आ खोइआ राखल रहैक । छट्टू झा बेर-बेर हुलकी मारिक' देखि जाइक । बानरक हेंज नहि आयल रहैक । बानर सभ आब जंगल, गाछी-बिरछी छोड़िक' शहर-बजारक दोकान, फल-फलहरीक ठेला, टोल-महल्लाक घर-आङन, बाड़ी-झाड़ी, फुलवारीमे आहार तकने फिरैक । माङ-ताङ करबाक जरूरते नहि, अपन हाथ जगन्नाथ... । जतय जे खाय बला चीज-वस्तु पर नजरि पड़ि गेलैक, लुपुटि पड़ल आ खा-पीक' बराबर। छट्टू झाक घरक कम्पाउन्डमे आम-लताम, लीची, केरा, अरनेबा, नेबो त' रहबे करैक, नीम, बेल, सागवान, कचनार आ अशोकक घनगर गाछ सेहो रहैक । मार्च-अप्रैलमे अशोकक गाछ फूलसँ लदल रहैक । बाड़ीमे फूल-पत्तीक गाछ आ तरकारी सेहो लागल रहैक । से ओकर कम्पाउन्ड बानर दलक प्रिय विश्राम-स्थली रहैक । आ, पेटपूजाक सेहो इंतजाम भ' जाइक । सालो भरि कोनो ने कोनो फल भेटिये जाइक । बानर सभ उपद्रव एखन धरि नहि कयने रहैक... नोकसान नहि करैक... एकरो ताज्जुब होअय... । खा-पीक' चलि दै... उजारै-पुजारे नहि, आ ने त' दकचि-फकचिक' फेकै... । छट्टू झाकेँ बानर दलक हुहुआइत आयब, गाछे-गाछ कूदब-छड़पब

—कोना क' धोबें ?

—कचिआ पसनी...

—कोना क' रान्हबें ?

—छन्नर-मन्नर...

—कोना क' खेबैं ?

—कुट्टुर-मुट्टुर...

—कोना क' सुतबैं ?

—लम्बा-चौड़ा...

—कोना क' पादबैं ?

—ढन्नर-मन्नर... ।

—हट् हट्, तोरा सिखबै छिऔ जे अंतिम पाँती नइ गाबय, से तों मानै नइ छैं... ।

फुद्दी बौआ नानीकें खौंझयबाक लेल अंतिम पाँतीकें दोहरबैत-तेहरबैत रहलि... ।

l

गणेश

रातिमे सुतैत काल सायमा नानीकें कहलकनि— नानी, पार्वती अपन प्रिय पुत्राय गणेशायकें कोरामे हरदम बैसाय दुलार कराय बला खिस्सा आइ सुना दिअने ?

—पहिने तों पूरा श्लोक सही-सही सुना आ एकटा करार कर ।

—करार माने ?

—करार माने प्रौमिस ।

—कोन प्रौमिस ?

—इयह जे श्लोक सभमे हँस्सी-ठट्ठा नइ करबें ।

—सॉरी नानी... सॉरी... आब नइ करब । श्लोक सुनाउ ?

—हँ सुना... ।

सर्वविघ्न-विनाशाय सर्वकल्याण-हेतवे ।
पार्वतीप्रियपुत्राय गणेशाय नमो नमः ॥

—वेरी गुड... फर्स्ट क्लास ! आब तोहूँ सून खिस्सा—

बहुत दिन पहिलुक खिस्सा छैक— जहिया गणेश छोट रहथिन—

कनिये टा... घरे-आङनमे खेलाथिन... बाहर नहि जाय दथिन हुनका माय । एक दिन एहन भेलैक जे पार्वतीकेँ स्नान करबाक बेर भ' गेलनि आ आङनमे और केओ नहि रहैक जे गणेश लग रहितैक, खेलइतैक आ बहरिआ लोककेँ भीतर नहि आबय दितैक । महादेवो नहि रहथिन ।

—ओ घर बन्द कियेक ने क' लेलनि ?

बाथरूम बन्द क'क' नहाबितथि !

—जाहि समयक ई खिस्सा छैक— तहिआ बाथरूम नहि रहैक। आ, हुनकर सभक घर त' पहाड़ पर छनि ने । ओ सभ पर्वत-नदी-घनगर जंगलक गुफामे रहैत रहथिन । पहाड़ परसँ खसैत झरना आ झीलक पानिसँ स्नान करथिन। से, तकरा घेरल कोना जइतैक ? त' बहुत सोचि-विचारि क' ओ बाल गणेशकेँ बुझा-सुझा क' गुफाक बाहर मुँह पर बैसा देलथिन । आ, कहलथिन—

बाउ ! हम स्नान कर' जाइ छी, जावत हम बाहर नइ आबी, अहाँ एत्तहि बैसू... । ककरो भीतर नइ आबय देबै... बुझलौं की ने...।

गणेश माय दिस देखैत पुछलथिन— ककरो नइ...

—नइ ककरो नइ... ।

आ, गणेश मूड़ी डोला देलथिन जे ठीक छै... । पार्वती निश्चिन्त भ'क' स्नान करय गेलीह ।

गणेश गुफाक बीचबीच पलथा मारि क' पहरा पर बैसि गेलाह । एहि बीच कतोक जन पार्वतीसँ आ महादेवसँ भेंट करय अयलथिन । गणेश सभके ँ मना क' देलथिन । आ कहलथिन बादमे आबय । सभ गोटे आपस चल गेलथिन। गणेश

बिलाइमौसी पूरापूरी तैआर रहैक । मुसबा फानिक' जहाँ ने चढ़लैक स्टडी टेबुल पर राखल इस्कूल बैग पर आ की ओ एक्के छड़पानमे मुसबाके ँ दबोचि लेलकै... ।

—चूंऽ चूंऽऽ चूंऽऽऽ चूंऽऽऽऽ-छोड़ि दिअ, छोड़ि दिअ । बिलाइमौसी ऐ बेर हमरा माफी द' दीअ... ।

—नासमझ, शैतान, दुष्ट तों हमर दोसक किताब काटबें... किताब खेबैं तों... लेऽऽ लेऽऽऽ आब खो मजाऽऽऽ आ चाङुरक दबाब बढ़बैत रहलैक बिलाइमौसी ।

—गलती भ' गेल, ऐ बेर छोड़ि दीअऽऽ आब कहिओ नइ अहाँक दोसक किताब हम खैब... ।

मुदा बिलैआके ँ मूस खायमे ओतबे सुअदगर लागैत छैक, जतेक नीक मूसके ँ किताब-कागज खयबामे । मूस त' मरिये गेल रहैक, बिलाइमौसी तकरा खूब सुआदि-सुआदि क' खयलक... ।

खिस्सा खतम ।

—नानी ओ गीत... ?

—आब कोन गीत... हमरा गीत गाबय नइ आबै यै... ।

—नानी ओ बलाऽऽऽ जे एहि खिस्साक बाद हम दुनू गोटे मीलक' गबै छी... ।

—आइ तोँ एकसरे गो गीत ।

—गे बिलैआ कत्त' जाइ छेँ ?

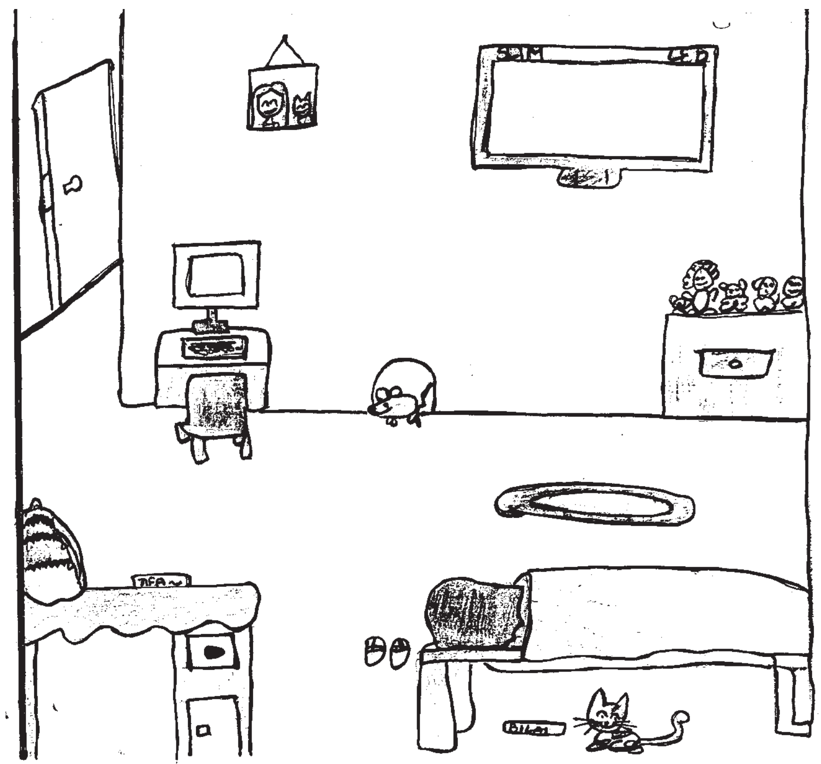
—माछ मार...

—कोना क' मारबेँ ?

—छप्पर छैंआ...

दोस, आ की बिलैआ अपन चाङुर हटा लेलकै आ बोरा पर चल गेलैक ।

अन्हार भ' गेलैक... । ओम्हर मुसबा फेर ताकमे रहय जे अन्हार होइ... मने सभ सूतय आ हम अपन बिलसँ बहराइ... । मूसकेँ किताब खयबामे बड़ सुअदगर लगैत छैक । ओ गमलक जे केओ जागल त' ने छैक... नहि केओ नहि... माने मैदान साफ... । एमहर बिलाइमौसी घात लगओने कनखीयेसँ देखि रहल छलैक मूसक सभटा तमासा । ओ आँखि खोलै नहि जे अन्हार घरमे ओकर आँखिक चमकसँ मुसबा बूझि जयतैक आ बिलमे फेर सुटकि जयतैक । बिलाइमौसी ओलरल पड़ल कनखीसँ देखि रहल छलैक— मूस धीरे-धीरे आगाँ बढ़ल... स्टडी टेबुल लग आबि क' रूकल, चारूकात तकलक... ।



एसकरे 'अटकन-मटकन दहिआ चटकन'



आ

'ताड़ काटू तरकुन काटू काटू रे बनछ्ज्जा

हाथी परसँ घुंघरू बाजे झमकि चल्ले राज्जा'

गाबि-गाबि क' खेलाय लगलाह । एतबेमे हुनक पिता महादेव अयलथिन आ, सोझे भीतर जाय लगलथिन ।

गणेश हुनका मना कयलथिन । मायक स्नान करबाक बात कहलथिन । हुनका कोनो आवश्यक काज रहनि । से, कहलथिन जे जेमहर ओ स्नान करैत छथि, ओ नहि जयथिन । इहो बुझओलथिन जे ओ बहिरआ नहि घरबैआ छथि । मुदा गणेश मानय लेल तैआर नहि । महादेवकेँ काजक हरमाद होइत छलनि... से कने तमसा गेलथिन ।

तइओ गणेश पहरापर निडरताक संग डटल रहलथिन । महादेवकेँ नितान्त जरूरी काज रहनि, देरी भ' रहल छलनि, काज बिगड़ि जयतनि । आ, गणेश टस्ससँ मस्स होयबा लेल तैआर नहि । महादेवकेँ बहुत क्रोध भेलनि आ, ओ गणेशक मूड़ी छोपि लेलथिन... । गणेशक चीत्कारसँ महादेवक बकार बन्न भ' गेलनि । गणेशक चीत्कार सूनि पार्वती लत्ते-पत्ते दौड़ल बाहर अयलीह— दृश्य देखि विलाप कर' लगलीह... महादेव हुनका शांत करयबाक बड़ कोसिस कयलथिन त' हुनक एकेटा शर्त रहनि— गणेशकेँ जिआउ !

महादेव अपन गण सभकेँ चारू दिस तेजीसँ दौड़ा देलथिन आ कहलथिन— पहिल जे भेटह, से ल'क' जल्दी आबह !

हाथीक सद्य: मुइल बच्चा नेने ओ सभ लगले घूरल । महादेव तत्काल ओकर घेंट काटिक' गणेशक धड़मे जोड़ि देलथिन आ गणेशकेँ जिआ देलथिन । गणेश माय-बाप दुनूकेँ देखि प्रसन्न भ' गेलाह । पार्वती हुनका कोरामे ल'क' दुलार करय लागलथिन । आ, महादेवकेँ कहलथिन— हमर नेनाकेँ देखि आन धीआ-पूता सभ हँसत, एकर मुँह दुसतै, सूँढ़ देखबैत कहलथिन, तकर कोन उपाय ? महादेव कनेक सोचि क' कहलथिन— अहाँक बेटा गणेश आइसँ, एखनहिसँ प्रथम पूज्य देवता भ' गेलाह... ।

जयबे करैक । पार्कमे आन-आन बच्चा सभ सेहो ओकरा संग खूब खेलाइ... । बिलैया कखनो खेलाइ आ कखनो अगराइ... ।

एकदिन संध्याकाल फुद्दी बौआ पढ़बाक लेल बैसल त' ओकर मन छोट भ' गेलैक । ओकर किताब फेर मूस काटि देने रहैक । मैम ओकरा डाँटने रहैक जे ओ अपन किताब-कौपीकेँ नीक जकाँ सम्हारि क' नहि राखैत अछि । जतय फुद्दी बौआ बैसय, बिलैआ ससरि क' ओतहि पहुँचि जाइक । आ, स्टडी टेबुल लग त' ओकरा लेल बोरा राखले रहैक, ओहो पलरिक' बैसल । से, ओकरा बुझयलैक जे ओकर दोस कनेक उदास छैक । ओ पुछलकै— की भेलौ दोस... तों उदास लागै छैँ...?

—हँ, दोस ! देख ने हमर नवे नव किताब सभ फेर मुसबा काटि देलक । इस्कूलमे मैम हमरा बड़ डाँटलनि... भरल क्लासमे हमरा 'केयरलेस' कहलनि । सौंसे क्लास मुस्की मारिक' हँसैत रहय...। माँ अलगे फोन पर डाँटत जे हम किताब फाड़ि लेलौं... ।

—तोँ उदास नइ हो दोस... हम छी ने, एकटा प□जा उठाक' बिलैआ बाजलै... आइये ओइ मुसबाकेँ हम पकड़ब, जे तोहर किताब कुतरिक' खा गेलौ... तोँ चिंता नइ कर... खुशी मनसँ पढ़... ई चिंता हम्मर, बाजैत अपन मुँह पोछय लागल चाङुरसँ, ओकर जीह चटपटा गेलैक । फुद्दी दिस ओ अपन प□जा बढ़ा देलकै, फुद्दीओ अपन हाथ बढ़ओलकै आ दुनू हाथ मिलओलक— Good friends !

राति भेलैक त' सभ गोटे खा-पीक' सुतय गेलाह । फुद्दीक पलंगक त'रमे बिलैआक ओछाओन रहैक । फुद्दी अगिला दिनक रूटीनसँ मिलाक' किताब-कौपी स्कूल बैगमे सैंत क' राखलक । हाथ-पयर धो क' ओछाओन पर गेल । बिलैआ पछिला टांग पर ठाढ़ भेल आ अगिला दुनू पलंग पर ध' देलकै आ, म्याउँऽऽ-म्याउँऽऽऽ बाजल । एहन सन जेना 'गुडनाइट' कहने होइ... फुद्दी कहलकै— गुडनाइट

—हँ, तोँ त' कहने रहैं, हमहीं बिसरि गेलहुँ... आब बूढ़ भेलहुँ की ने । अच्छै खिस्सा सून... फुद्दी भिनसरे उठि अपन नाना संगे टहलय जाइक । बिलैओ जाइ संग लागल टुनटुनी बजबैत । टहलिक' अयला पर नाना च्यवनप्राश खाथिन, दूध पिबथिन, फुद्दिओ दूध पीबै आ बिलैया खाइ दूध-सोहारी । फुद्दी अपन पढ़ाइ-लिखाइमे लागि जाइ, बिलैया ओहीठाम बैसल ओकरा देखैत रहैक । कखनो ओकरा औंघी लागै त' सूतिओ रहय, कखनो उड़ैत माछीकेँ देखि कूदि-कूदिक' ओकरा पकड़बाक कोसिस करय ।

—वाह ! वाह !! वाह रे बिलाइ ! मूसक बदला माछीक सिकार... ।

...फुद्दी जखन तैआर भ'क' इसकुल चल जाइक त' बिलैया उदास भ' जाइक । एसकर भ' जाइ तेँ... । ओकरा संग केवल फुद्दी बौआ खेलाइत रहैक । दुनूमे बड़ दोस्ती रहैक । एक दोसर बिनु ककरो मन नहि लागै... ।

—नानी दुनू 'गुड फ्रेन्डस' रहैक ने !

—हँ जा फुद्दी इसकुलसँ घुरि क' आबैक तावत धरि बिलैया मन्हुआयल कतहु पड़ल रहैक अथवा एमहर-ओमहर टौआयल घुरय । कोनो नेनाक बाजब सुनै त' तेना म्याउँ-म्याउँऽऽ कर' लागै जेना, ओकरा डाँटैत होइक— भाग एतयसँ... हमर दोस्त नहि अछि... तों की कर' एलै हेँ...।

सांझमे जखन फुद्दी बौआ इसकुलसँ आबैक त' बिलैया फुद्दीक चारू कात घुरिआइत रहैक । ओकर पयरमे रगड़ा लै... अपन देह रगड़ै ओकर पयरमे... कूदिक' ओकर कोरामे चढ़ि जाय चाहै... । फुद्दी बौआ- थम्ह ! थम्ह ! कहैत जल्दी-जल्दी कपड़ा फेरय आ पयर-हाथ धो क' खाय... बिलैओ खाइ... । फेर दुनू खूब खेलय... । फुद्दी बौआ पार्क जाइ त' बिलैआ पाछु लागल, घंटी टुनटुनबैत

—नानी अहाँक पूजामे जे फोटो अइ, तैमे गणेश महादेवक कोरामे बैसल छथिन ने... ।

—हँऽऽऽऽ ।

—महादेव सेहो झटसँ पार्वती प्रिय पुत्राय गणेशायकेँ कोरामे बैसाय लेलथिन ने नानी ।



—हँ, तों सभ बात बूझि जाइ छेँ । आब सूत आ हमरो सूतय दे... ।

सती–शिव कथा

नानी कहानी सुनाउ... ।

—खिस्सा...?

—हँ खिस्सा... ।

—कोन खिस्सा ?

—कोनो अहाँ अप्पन मनसँ सुनाउ ।

—अच्छै...

बहुत दिन पहिनेक गप्प छैक...

—नानी कत्ते दिन ?

—बहुऽऽऽऽत दिन... सय... हजार... वर्ष... पहिलुक... ।

—मिलिअन्स ऑफ इयर्स... ?

—हँ सैह... एकटा राजा रहथिन । नाम छलनि दक्ष- दक्ष प्रजापति । हुनक राजमहल पहाड़ पर रहनि... हिमालय पर्वत पर । ओ अपन रानी, स्टाफ, हाथी, घोड़ा, अस्त्र-शस्त्रक संग रहैत रहथि । राजा नीक रहथि । हुनकर मित्र रहथिन— दोसर-दोसर राजा आ देवता सभ । हुनक मित्र आ सभ देवता बड़ ताकतवर रहथिन ।

बिलाइमौसी

कोनो शहरमे एकटा रहैक फुद्दी बौआ । ओ अपन नानी-नानाक संग रहैत छलैक । ओहि घरमे एकटा बिलाइओ रहैक । ओ फुद्दी बौआक पोसुआ रहैक । उज्जर-धब-धब रहैक ओ । ओकर नाम फुद्दी रखने रहैक— बिलाइमौसी । ओ बिलैयाक घेंटमे घुंघरूक चारिटा दाना गाँथि क' पहिरा देन रहैक, से जखन बिलैया चलै त' घंटी बाजै—

टुन-टुन-टुन-टुन-टुन-टुन । घंटीक टुनटुनी सुनयमे बड़ नीक लागैक आ दूरेसँ सभ बूझि जाइक जे बिलाइमौसी चलल आबै छै... । फुद्दी पढ़ैत रहैक स्कूलमे । ओकर नाम फुद्दी कियेक रहैक से कहिऔ... ?

—हँ, नानी माँ, कहू ने... ।

—तोरे जकाँ कनिये ओहो खाइ छलै, आ हरदम फुदकैत रहै... ।

—नानी माँ, हम कनिये नइ खाइ छी, ठीक खाइ छी... देखू हमर हाथ-पयर... केहन मजगूत अछि । हम कराटे सीखै छी... । हम अहाँके कहने छी ने जे अपन बैचक लड़का कराटे चैम्पिअनकेँ हम हरओने छी... ।

—आइ की सुनयबें ?

—आइ... ? नानी, त्वमेव माता... ? हँ सैह सुना...

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव-देव ॥

l

—ताकतवर माने ?

—पावरफुल... । दक्ष प्रजापतिमे सभ गुण रहनि । मुदा, रहथि ओ बड़ घमण्डी । हुनका एकटा बेटी रहनि । नाम रहैक सती । सती जतबे सुन्नरि, ततबे बुधिआरि । पढ़ाइमे बड़ तेज । सभ चीज बड़ जल्दी सीखि जाइ । सभ चीजमे सभसँ आगाँ-आगाँ रहैक...

—टॉप करै...

—हँ, टॉप करै... । सती बड़ डिसीप्लीन्ड बच्चा रहैक । सभक संग हिल-मिलक रहै... । माय-बाप सतीकेँ बड़ दुलार करथिन । सती जखन पैघ भ' गेलैक त' विवाह करयबाक लेल वर ताकय लगलथिन । अनेक राजा सभ सतीसँ विवाह करबाक लेल तैआर रहथि । मुदा सती किनको ने पसिन करथिन । हुनका पसिन रहथिन महादेव । मुदा, हुनक पिताकेँ महादेव पसिन नहि रहथिन । दक्ष प्रजापति सतीकेँ बुझयबाक कोसिस कयलनि— शिवकेँ राजमहल नइ छनि... सवारी लेल हाथी-घोड़ा-रथ नइ छनि... स्टाफमे भूत-प्रेत छनि... ।

—नानी ! शिवजीक सवारीक नाम छै— नन्दी । ओ बैल छै... आ, भूत-प्रेत किछु नइ होइ छै नानी... ।

—तोरा त' सभटा बूझल छौ... । मुदा, सती निर्णय क' नेने रहथि जे ओ महादेवे संग विवाह करतीह । दक्ष प्रजापतिकेँ राजी होअ' पड़लनि । विवाहक बाद सती महादेवक संग कैलाश पर्वत पर रहय लगली... ।

—गुफामे ?

—हँ... । एकबेर राजा दक्ष एकटा यज्ञक आयोजन कयलनि । आन-आन राजा आ देवता सभकेँ नोत-हकार देलथिन । मुदा, अपन बेटी सती आ जमाय-शिवकेँ नहि देलथिन ।

—हमर डैडी अहाँक जमाय... ?

—हँ..., सतीकेँ जखन बूझल भेलनि त' ओ महादेवकेँ कहलथिन जे ओहो जाय चाहैत छथि । महादेव मना कयलथिन जे बिना निमन्त्रणक नहि जयबाक चाही ।

—सतीक डैडी सतीकेँ इनभाइट नइ कयलथिन...?

—नइ... ।

—बहुत गलत बात... । तखन की भेलै नानी... ?

—तखन की ? सती जिद कर' लगलथिन जे हम जयबे करब । पिताक घर जयबाक लेल निमन्त्रणक जरूरति नइ होइ छै आ, महादेवकेँ खुस करबाक लेल—

ओम् नमः शिवाय, शिवाय नमः ओम् ।
ओम् नमः शिवाय, शिवाय नमः ओऽऽऽम् ॥

क जाप करय लगलीह । तखन महादेव अपन गणकेँ आदेश देलथिन संगमे जाइ लेल आ यज्ञक समापनक बाद संगहि नेने अयबाक लेल। नन्दी सेहो संग गेलनि । महादेव तपस्यामे लीन भ' गेलाह ।

—मेडिटेशन...?

—हँ मेडिटेशन । जखन सती ओतय पहुँचलीह त' हुनक स्वागत केओ नहि कयलकनि । केओ लग नहि अयलनि । बैसबाक लेल नहि कहलकनि । ओ चुपचाप ठाढ़ रहथिन ।

—माँओ-पप्पा नहि ?

—नहि... ।

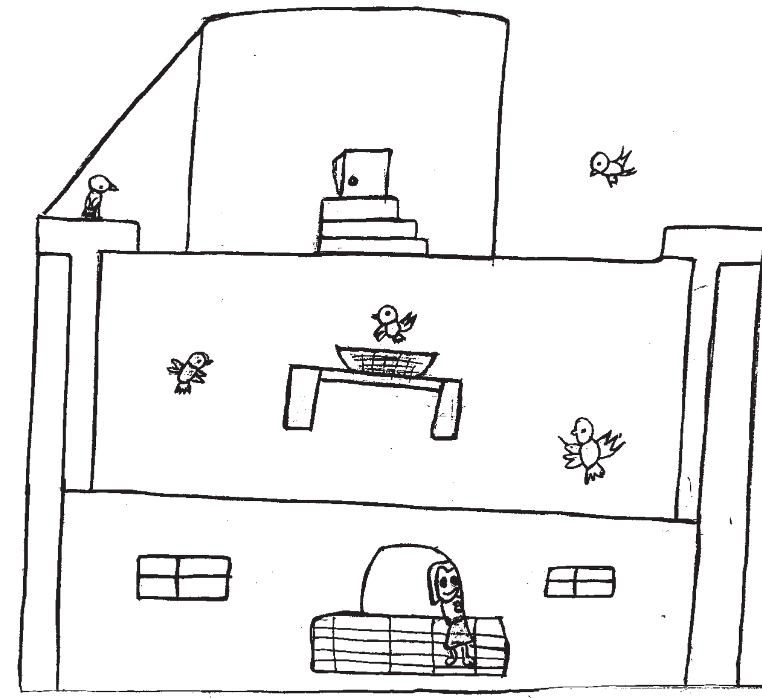
—तखन की भेलै नानी... ?

—नानी प्रैक्टिस करै उड़ैक ।

—हँ, सैह करै । एहिना होइत-होइत एक दिन भिनसरमे खूब सबेरे एकटा बड़का छिट्टा ल'क' छत पर गेलैक आ बगरोकेँ ओहिमे ध' देलकै । दुनू हटिक' देखय लगलैक । कनिये कालक बाद बगरोक एकटा झुण्डे उतरि गेलैक छत पर । सभ मीलक' खूब चीं-चीं... कयलकैक जेना कहैत होइक जे ई के छैक, कत'सँ आयल, ई त' हमर सभक समाजक थिक, कतय रहय एतेक दिन...?

—नानी ओकर 'पप्पा' रहैक ओहि झुण्डमे...?

—हम नहि चिन्हलियै... । 'आले' बगरो फुदकैत-फुदकैत छिट्टासँ बाहर अयलै... बगरो सभ ओकरा ल'ग अयलै... आले ठमकि गेलै.. फेर छत पर फुदकैत उड़ैत-उड़य लागलै... । बगरो सभ ओकरा गोलिआ क' घेरा जेकाँ बना लेलकै आ, घेराक बीचमे बगरो सभक संग उड़ि गेल... आले चलि पड़ल अपन देस... ।



हल्ला कर' लगलैक...। जोड़ीदार अयलैक त' कनेक कालक लेल चुप्प भ' गेलैक । मुदा फेर एहन आवाजमे चीं-चूँ, कच-बच कर' लगलैक जेना माय लेल कनैत होइक... । बाप भिनसरमे जे उड़ि गेलै से फेर घूरि क' नहि अयलै... ।

—तखन ओइ बच्चाक की भेलै नानी... ?

—तोहर ममी-मौसी टेबुलपर इस्टूल राखिक' उपर चढ़ि क' खोंता उतारलकौ... । बच्चा डेराक' एक कोनमे सुटकि गेलैक... खूब दुलारक बोली देलकै त' कनेक सुगबुगयलै... खोंता समेत ओहि बच्चाकेँ एकटा जुत्ताक डिब्बामे ध' देलकै । डिब्बामे रूइआ-तुइआ ओछा देलकै जे बच्चाकेँ आराम होइक । दुनू बहीन मीलक' ओकरा ड्रौपरसँ दूध पिआबै । एक-दू-दिनमे बगरो तेना ने रितिया गेलैक जे डिब्बाक झाँपन हटाबिते लोल बाबि दैक... तोहर ममी कहैक— 'आले' आ, ओकर नामे पड़ि गेलैक आले...। भातक दाना पीचक' ओकर खूजल लोलमे ध' दैक । घोंटि जाइक । बादमे त' कीड़ी-मकोड़ी पकड़िक' सेहो डिब्बामे ध' दैक । जुत्ताक डिब्बा आब छोट पड़ि गेलैक । तखन कूटक एकटा बड़का डिब्बाक जोगार कयलकौ । बगरो ओहि डिब्बामे टहलय-बूलय लगलैक... ।

—नानी ई ओयह खोंता छै...?

—हँ, तोहर ममी-मौसी संजोगिक' रखने छौ... । नाना कहलथुन— जे आब ई नमहर भ' गेलै- एकरा उड़ा दही... त' दुनू बहीन अड़ि गेलैक जे एकरा पोसब... पिजड़ामे बन्न क'क' राखब... । ई हमर सभक 'आले' थिक । नाना बुझओलथिन जे तोरा सभकेँ जौँ केओ पकड़ि क' राखि लौक आ घरमे बन्द क' दौक, हमरा सभसँ भेंट नहि करय दौक, त' केहन लगतौक ? तखन दुनू बहीन बात बूझि गेलैक । आ, बगरोकेँ डिब्बासँ निकालि कोठलीमे ध' दैक... केवाड़-खिड़की बन्न क' दैक... बगरो फड़फड़ाक' उड़य-खसय...फेर उड़य... ।

—सतीकेँ बड़ खराब लगलनि । पश्चाताप भेलनि जे ओ महादेवक बात नहि मानलनि । अपमान लगलनि ।

—अपमान माने... ?

—इनसल्ट । ओ इन्सल्टेड अनुभव कयलनि । पिताकेँ पुछलथिन । पिता कहलथिन जे यज्ञमे पैघ-पैघ राजा आ देवताकेँ निमन्त्रण देल गेलनि । पैघ लोक आ देवता आयल छथि । महादेव पैघ नहि छथि ।

—पैघ माने... ?

—पैघ माने... इम्पॉर्टेन्ट... । तखन सतीकेँ बड़ क्रोध भेलनि । ओ यज्ञक हवन कुण्डमे...

—फायर प्लेस...?

—हँऽऽऽ, कूदि गेलीह ।

—बाप रेऽऽऽऽऽ... ।

—महादेव त' सभसँ पैघ देवता छथिन । देवता सभक देवता— देवाधिदेव महादेव... । ओ तपस्यामे रहथिन— सभटा बूझि गेलथिन । एमहर हुनकर गण सभ यज्ञकेँ पूरा नहि होअय देलकै । हंगामा क' देलकै ।

—सतीक माँ-पप्पा किछु नहि कयलकै... ?

—नइँऽऽऽऽऽ ।

—डाक्टरो नइ बजओलकै... । गंदा माँ-पप्पा... ।

महादेव तुरन्त दौड़ल-दौड़ल पहुँचि गेलथिन आ सतीकेँ हवन कुण्डसँ बाहर निकालि, कनहापर उठा लेलथिन । ओ ओतयसँ विदा भ' गेलाह... ।

—डाक्टर ओतय...

...महादेव दु:ख आ क्रोधसँ बताह जकाँ करय लगलथिन । सतीकेँ कनहा पर झुलओने सौंसे दुनियाक रौण्ड मारय लगलथिन...



—नानी वेट..., वेऽऽट नानी वेऽऽऽट... कहैत घरसँ बहरा गेलि वृषाली आ, धूरलि त' ओकर हाथमे 'अमर चित्रकथा' सीरिजक एकटा किताब रहैक— 'स्टोरीज ऑफ शिवा'...ओ पन्ना उनटबैत बाजलि—

गेलै...। ...हमरो चिंता भ' गेल जे एकर जोड़ीदारकेँ की भ' गेलैक... बाट भोतिया गेलैक, की मरि-तरि गेलैक...। ओही चिन्तामे राति बीतल । तोहर ममी-मौसी पढ़ौ कम काल आ ओकरा देखै जाइ बेसी काल... दुनू बहिनो चिंतामे जे की भ' गेलै चिड़ाकेँ... ?

आह ! दोसर दिन भिनसरमे ओ अयलैक आ पंखे पर जा'क' बैसलै जेना ओकरा बूझल रहैक जे ओ कत' छैक आ, दुनू अपन बोलीमे बतिआयल-खोतिआयल आ उड़ि गेलैक दुनू एके संग दाना-पानीक खोजमे । समय बीतल गेलैक...फेर बुझायल जे एके टा बहरी-भीतरी करैत छैक । होइत-होइत आर किछु दिन बितलैक । मइ मासमे रोशनदानमेसँ म□म आवाज... चिड़ैक बाजब सन सुनाइ पड़य लागल... ओऽऽऽ अण्डामेसँ बगरो बाहर भ' गेलै... किछु दिनमे उड़ि जायत आ चल जायत अपन समाजमे, मुक्त अकासमे उड़त... । तोहर ममी आ मौसीक इच्छा जे बच्चाकेँ देखी । तोहर नाना बुझओलथिन जे जँ बगरो डेराक' उड़ि जयतैक त' बच्चाकेँ के पोसतैक ? आब हमरा सभकेँ ओहि तीनूक कचबच बोली सुनयमे बड़ नीक लागय । भिनसर क' तीन टा 'चहकब' स्पष्ट बुझाय... । तोहर ममी-मौसी बगरोक संग लागल ओकर आवाजक नकल उतारैक । जिद्द करैक जे ओकरो बिस्कुट देतैक, टॉफी देतैक... की त' जे गौँसँ खोतामे ध' देबैक । आ, सैह करय पड़ल... ।

—नानी आगाँ बाजू ने... । की भेलै नानी...?

—एक दिन हम सभ बेरू पहर ओही टेबुल पर बैसल रही । तावत धरि जून मास भ' गेल रहैक । पंखा चलैत रहैक । बच्चाक माय भरि घोघ खाना ल'क' अयलैक— तेजीसँ उड़ैत, बैलेंस गड़बड़ा गेलैक आ पंखासँ टकराक' खसि पड़लैक... खतम भ' गेलैक बेचारी... । ओह ! ओऽऽऽह !!

—नानी पंखा कियै नइ बन्द क' देलियै... ।

—...साँझ भ' गेलैक । माय नहि अयलैक त' बच्चा बड़

दाना सेहो छिड़िआ दै... । चिड़ै-चुनमुनकेँ जत' दाना-पानी आ छाहरि भेटतै...अयबे करतै... से सभ उतरै आ अपन-अपन हीसक खाक' फेर उड़ि जाइ... । गाछ सभक कीड़ी-मकोड़ी सेहो चूनि-बीछक' खाइ...।

एहिनामे एकदिन चाह पिबैत, अखबार पढ़ैत काल बुझायल जे एकटा बगरो बेर-बेर अबै आ, फेर उड़ि जाइ । ओ आबिक' रोशनदान पर, जाहिमे जाली लागल छैक, बैसे आ चारू भर अपन एतबी टाक गर्दनि आ कनी-टा-टा आँखि घुमा क' देखै... । की देखै पता नहि । फेर आयल त' जोड़ामे । दुनू रोशनदान पर बैसल आ चींचीं-चूं-चूं क'क' अपन बोलीमे बतिआयल । फेर उड़ि गेलैक । तोहर ममी-मौसी स्कूल, नाना ऑफिस । हम घर-बाहरक काज करैत देखलियैक जे दुनू अपन-अपन लोलमे किछु-किछु ल'क' आबय आ रोशनदानक भीतर-कोठली दिस जाक' राखि आबै- कखनो खढ़-पात, कखनो नीमक काठी, तूरक फाहा, चिड़ै-चुनमुनक पाँखि । बुझा गेल जे खोंता बना रहल यै... अंडा देतै... । एक मन भेल जे खोंता नहि बनबय दिअइ... उजाड़ि दिअइ... गंदा करै जाइ यै... । काजक खढ़पात राखिक' बाकी त' निच्चे खसाबै यै... हरदम खढ़-पात बीछैत रही...। मुदा, से मनमे नहि जँचल । सोचल बच्चा नमहर भ' जयतैक त' अपने उड़ि जयतैक आ इहो दुनू चल जायत । से उछन्नर देब ठीक नहि । दिन भरि ओ सभ खोंता बनबै आ सांझक बाद नहि आबै... । जखन खोंता पूरा-पूरी बनिक' तैआर भ' गेलैक त' बास ल' लेलक । दुनूक चहकब-फुदकब जतबे नीक लागय, बीट साफ करब ओतबे अधलाह । एहिना होइत-होइत अप्रैल मास भ' गेलैक-मार्चमे शुरू कयने रहैक । एकदिन संध्याकाल एकेटा अयलकै । भेल जे अयबे करतैक जोड़ीदार । मुदा नहि अयलैक । आ, ओ की कयलकै से बुझलहीं...?

—की कयलकै... ?

—ओ भरि राति एही पंखा पर बैसल रहलै... खोंतामे नइ

आब हम कहब । महादेवकेँ 'काम एण्ड कूऽऽल' करबाक लेल लॉर्ड विष्णु सतीक बॉडीकेँ अपन व्हीलसँ फ़ि□टीवन पीसेजमे काटि देलथिन... ।

—गय, तोरा त' अपने अबै छौ । हमरा झुट्ठे हरान करै छैँ...।

—नानी सुनैमे बेसी नीक लागैयै... ।

आब दोसर कहानी नानी... ।

—आइ नइ, काल्हि... ।

—प्रौमिस नानी... ?

—प्रौमिस ।

—नानी दुर्गाक कहानी... ।

—सुनयबौक, मुदा पहिने तोँ एकटा श्लोक सुना हमरा, अप्पन मनसँ कोनो ।

—ठीक छै, सुनू—

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

वाह ! वाह ! बहुत सुन्दर... ।

दुर्गा

नानी अहाँ प्रौमिस कयने रही जे दुर्गाक कहानी— नइऽ नईऽऽ खिस्सा सुनायब, से सुनाउ ने !

—दिनमे खिस्सा नइ सुनबै छै ।

—दिनमे सुनयलासँ की भ' जाइ छै ?

—आन्हर भ' जाइ छै ।

—अहाँकेँ जखन सुनयबाक मन नइ रहै यै त' अहाँ किछुसँ किछु बहाना बना दै छी । रातिमे पक्का... ।

—हँ पक्का । आ, रातिमे सुतैत काल चिकोचाँक पयर जाँतैत नानी कहलथिन— हँ, त' आब सून खिस्सा...

हिमालय पर्वतक एक खण्डमे दुर्गा नामक एकटा कन्या रहैत रहथिन । पहाड़ खूब नमहर-नमहर गाछसँ घेरल रहैक— तीन दिससँ । खूब घनगर जंगल रहैक । निच्चाँ पहड़तल्लीमे खूब सुन्दर हरिअर कचोर घास रहैक आ जंगली फूल सभक गाछ रहैक । भरि मोन फुलाइत रहैक ओ फूल सभ । सोझाँमे रहैक पहाड़ी नदी... । पहाड़ परसँ झहरैत झरनाक जल ओहि नदीमे लगातार खसैत रहैक । साफ-स्वच्छ-नील रंगक जल... खूब सुन्दर मनोरम जगह रहैक ।

आले

एकटा खास खिस्सा सुनयबाक लेल छटंकी बाजलि—

—नानी, अहाँ खोंताबला खिस्सा नइ सुनबै छी । सभ राति कहै छी काल्हि... ।

—ओ बड़ी टा खिस्सा छै... तों सुनैत-सुनैत सूति रहबेँ... ।

—नानी हम करार करै छी जे जगले रहब । पूरा सूनिक' सूतब । आइये सुना दिअ ने... प्लीज नानीऽऽऽ... ।

—अच्छै सून...

बहुऽऽऽऽत साल पहिलुक बात छैक । हम आ तोहर नाना बाहरमे बैसल चाह पिबैत रही भिनसरमे आ, बाहर दिस गाछ-वृक्ष, फूलपात, हरिअरी, चिड़ै-चुनमुन्नी देखैत रही । ओकर सभक चहकब बड़ नीक लागय । फूलक डाढ़ि पर बगरो आ की मैना बैस जाइ आ झूला झूलय... । अकासमे उड़ैत अनेक प्रकारक चिड़ै-चुनमुन... सभ तोहर नानाक कम्पाउन्डमे उतरि जाइ... । तोहर ममी आ मौसी की कयने रहौ सेहो कहिऔ ?

—हँ... हँऽऽ ।

—दुनू मीलक' दही पौरेबला दू टा छाँछ कीनक' अनलकौ आ आम आ लतामक गाछपर टाँगि देलकै... । दुनूमे पानि भरै डेली...। आ

—गोरिल्लावार... ।

—ओऽऽऽऽ !

दुर्गा त' अपने सभ विधामे पारंगत रहथिन । ताहि परसँ सभ देवताक पावर आ एनर्जी हुनका संग रहनि । ओ तुरन्त बूझि गेलथिन । जखने ओ अपन रूप बदलि क' भैंसा बनय लागल, आ की ओ बूझि गेलथिन । तत्काल ओ ओकर छाती पर कूदिक' ठाढ़ि भ' गेलथिन... । महिषासुर अवाक ! जे दुर्गा बूझि कोना गेलि ओकर चालि ? दुर्गा छातीपर ठाढ़े-ठाढ़ अपन पावरसँ महिषासुरक रूप बदलनाइकेँ रोकि देलथिन... ।

जा महिषासुर बूझय-बूझय तावत त' त्रिशूल ओकर छातीमे गँथि गेलैक... भीतर धरि धँसि गेलैक । ओकर प्राण खतम भ' गेलैक ।

तखन फेर सभ देवता अयलथिन ।

—दुर्गाकेँ कौंग्रेच्युलेट कर' आ थैंक्स देबय ?

—हँ... । सेहो कयलथिन आ प्रौमिस करओलथिन जे जरूरति पड़ला पर हमर सभक फेर मदति करब । दुर्गा मानि गेलथिन । आब तोँ अपन काज कर ।

—अच्छै, सुनू नानी—

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोऽस्तु ते ॥

l

—नानी ! हम एहन जग्गह सभ देखने छी... सभ पहाड़ पर एहन जगह रहैत छैक । हँ, कोनो-कोनो पहाड़ एहनो छैक, जतय गाछ-वृक्ष नहि छैक । ओकरा कहै छै— नंगा पहाड़... ।

—तोरा त' बहुत किछु बूझल छौक । से, ओहि जंगलमे विभिन्न प्रकारक बनैया जीव-जन्तु रहैक ।

—आ, नानी दुर्गाक वाहन सिंह ?

—ओहो रहैक ।

—एसकर दुर्गाकेँ जंगलमे डर नहि लागै ?

—नहि ओ बहुत निडर आ साहसी रहथिन । एकदिन ओ पाथरक एकटा शिलापर बैसल ध्यानमे रहथि । ध्यानमे हुनका बुझयलनि जे बहुत लोक सभ ओतय ठाढ़ छथि । आँखि खोलि देखलनि जे सभ देवता उपस्थित छथि— कल जोड़ने ठाढ़ छथि । ओ झटसँ उठि, हाथ जोड़ि, माथ झुकाक' सभ देवताकेँ गोड़ लागलथिन । फेर पुछलथिन जे ओ सभ कियेक आयल छथि ? एक देवता कहलथिन जे महिषासुर नामक राकस...

—राक्षस कहू ने...

—हँऽ हँऽऽ राक्षसे... बड़ उत्पाती आ अत्याचारी भ' गेल छैक । ओ मनुष्य, जीव-जन्तु, माल-जाल आ एतेक धरि जे हमरो सभकेँ बड़ दुःख दै यै ...।

दोसर गोटे कहलथिन— पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन, कोनो प्रकारक काज शान्तिपूर्वक केओ नहि क' सकैत अछि । खेती-बाड़ी, नेना सभक पढ़ाइ-लिखाइ सभ बन्न भ' गेल छैक । ओकर दलक राकस सभ सौंसे दुनियामे पसरि गेल छैक । सभतरि तबाही मचओने छैक । हम सभ ओकरा सभकेँ मारबाक बड़ कोसिस कयलहुँ, मुदा ओ मरल नहि । उनटे हमरा सभकेँ आओर तंग करय लागल अछि ।

बड्ड उदण्ड भ' गेल अछि । अंतमे हम सभ अहाँ लग आयल छी... आब अहीं किछु करू... । हमरा सभकेँ आ, सौंसे दुनियाकेँ बचाउ...।

दुर्गा कहलथिन जे जखन अहाँ सभ गोटे पुरुष भ'क' हारि गेलहुँ, त' हम लड़की भ'क', सेहो एसकरि, की क' सकै छी...?

देवता सभ कहलथिन– कन्या सभ बड़ बुधियारि ओ शक्तिशाली होइत छैक । ओ ठानि लेअय त' किछुओ क' सकैत अछि । से, हमरा सभकेँ विश्वास आ भरोस अछि जे केवल अहीं महिषासुरक वध क' सकैत छी । तखन दुर्गा कहलथिन जे– हम कोसिस करब । देवता सभ कहलथिन– अहाँ एसकर नहि छी । हम सभ अपन-अपन पावर, एनर्जी, अस्त्र-शस्त्र आ वाहन सभ अहाँकेँ द' देलहुँ । सभ अहाँक अधीन रहत । सभक अहाँ प्रयोग करू । सभ गोटे तखनहि अपन-अपन शक्ति, अधिकार, ताकत, अस्त्र-शस्त्र आ वाहन द'क' चल जाइत गेलाह ।

दुर्गा नीक जकाँ सोचि-विचारि क' योजना बनओलनि । ओ पहिने एकटा समदिआ– दूतकेँ पठओलथिन, महिषासुरकेँ बुझयबाक लेल । ओकरा कोनो असरि नहि भेलैक । तखन एकदम्मसँ यु□ शुरू क' देलथिन । महिषासुर सोचलक जे ई एकटा एसकर लड़की हमरा की करत ? हमर ई की बिगाड़त ? जखन बड़का-बड़का देवता सभ फेल भ' गेलाह, हारि गेलाह, हमरा डरेँ पतनुकान ल' लेलनि त' एकर कोन डर ? इयह सभ सोचैत, घमण्डमे चूर ओ यु□ क' रहल छल । मुदा, ई की ? ओ गमलक आ देखलक जे ओकर दलक राकस सभ पट-पटक' मरि रहल छैक । ओकर निशाना फेल भ' रहल छैक । ततबे नहि आब त' ओकरो पर आघात होअय लगलैक । ओकर सेनाक संख्या घटि रहल छलैक आ एमहर दुर्गा एसकरे सभक हालत खराब कयने रहथिन ।

तखने, अचानक ओ छड़पिक' अकास ठेकि गेल आ ओतहिसँ, उपरे-उपर वार करय लागलै... । दुर्गा सेहो एक्के छड़पान...



—नानी- छड़पान माने ?

—उँऽऽ उँऽऽऽ छलांग-छलांग... एक्के छड़पानमे ओकरोसँ ऊपर पहुँचि आओर अधिक शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्र चलब' लागलथिन । नीचामे देवता सभक सेना आ वाहन यु□ क' रहल छलैक । महिषासुरकेँ बुझाय लगलैक जे एहि लड़कीसँ पार पायब बड्ड कठिन अछि । कठिने नहि-असम्भव अछि । तखन ओ छद्मयु□ शुरू कयलक ।

—छद्मयु□ ?